Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

मृच्छकटिकम् में पात्रों का चरित्र–चित्रण

डॉ0 अभय शंकर
सहायक प्राध्यापक,
राम औतार गौतम संस्कृत महाविद्यालय,
अहल्यास्थान, दरभंगा,भारत।

सारांश – मदनिका दासी कुल में उत्पन्न होने एवं गणिका की सेवा में रहती हुई भी एक कुलीन वधू के अरमान रखती है। वह मृद्भाषिनी विनम्र चतुर एवं अवसर के अनुसार निर्णय लेने वाली बुद्धिमान नारी का प्रतिनिधित्व करती है। उसमें धैर्यका अभाव नहीं है। उसका आचरण एक आदर्श प्रेमिका का है, जो त्याग की प्रतिमूर्ति बनकर नाटक में उभरी है। मदनिका और शर्विलक का विवाह कराकर वसन्तसेना ने अपना और चारूदत्त का मिलन सुनिश्चित करवाया। यद्यपि मदनिका और शर्विलक का कथानक मुख्य कथा के क्रम में एक अवरोध बन कर आया है, तथापि इसका अपना महत्व है। दोनों ही पात्र कथानक को अग्रसर करने में काफी सहायक सिद्ध हुए हैं।

शब्दशब्द– संस्कृत, महाकवि शुद्रक, मृच्छकटिकम, साहित्य, चरित्र–चित्रण, नाटक, पात्र।

''मृच्छकटिकम्'' एक परिचय

संस्कृत नाट्य साहित्य में महाकवि शुद्रक तथा उनकी लौहलेखनी प्रस्तुत नाटक **'मृच्छकटिकम'** का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत प्रकरण में कवि की नाटकीय पात्रसंयोजन पात्राभिव्यक्ति वर्णनवैचि«य की जीवन्तता एवं सप्राणता ने इस नाटक में पाठकों के हृदयतल के कोमलतम तलों का दिव्यस्पर्श बना दिया है ।

वास्तव में कवि की महत्ता चारूदत्त और वसन्तसेना आदि उच्च व प्रमुख पात्रों के साथ–साथ उपपात्रों के चरित्रचित्रण में ही है। इन सभी मूर्तियों (पात्रों) का निर्माण तत्कालिन सामाजिकता की मृत्तिका से ही हुआ है। इनकी प्रकरण रचना चरित्र चित्रण और भावप्रदर्शन अप्रतिम है।

प्रस्तुत नाटक **''मृच्छकटिकम्''** में तीस पात्र हैं, जो सभी प्रकार के व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक ओर ब्राम्हण चारूदत्त, राजा 'पाल' न्यायाधीश जैसे सम्मानित पात्र है तो दूसरी ओर चोर जुआरी, विट चेट जैसे तुच्छ पात्र भी सम्मिलित है। नाटक में कवि द्वारा किया गया चरित्र चित्रण एक ओर उनके मानव स्वभाव से उनके

(कविके) गहन परिचय को दर्शाता है, तो वही दूसरी ओर उनके गम्भीर सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक ज्ञान का भी परिचायक है। **'मृच्छकटिकम्'** के सूक्ष्म अवलोकन से निम्न प्रकार से कुछ पात्रों का चरित्र चित्रित कर सकते है।

विदूषक की चारित्रिक विशेषताएं :–

नाटक का विदूषक मैत्रेय जाति का ब्राम्हण तथा चारूदत्त का नर्म सचिव ही नहीं अपितु घनिष्ट मित्र भी है। संस्कृत के अन्य नाटकों की तरह मैत्रेय एक हास्योत्पादक विदूषक ही नहीं है। उसमें परम्परागत विदूषक के गुणों के साथ–साथ एक विशिष्ट व्यक्तित्व भी है कवि ने बड़ी कुशलता से इस पात्र के चरित्र–चित्रण द्वारा तत्कालीन सामाजिक दशा का सुन्दर चित्रण की है। **'मृच्छकटिकम्'** के सूक्ष्म अध्ययन से निम्न प्रकारेण इस पात्र चारित्रिक विशेषताओं का अवलोकन कर सकते हैं।

1. विदूषक के रूप में

मृच्छकटिकम् श्रृंगाररस प्रधान होने से विदूषक ''मैत्रेय'' नायक का प्रधान सहयोगी है नाट्य सिद्धान्तों के अनुसार मैत्रेय में विदूषक के सम्पूर्ण गुण विद्यमान है। यथा –

कुसुमवसन्ताद्यभिद्य : कमवपुर्वेषभाषाद्यै।।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात्स्वकर्मज्ञः।।

नाटक के आदि से अन्त तक एकमात्र मैत्रेय द्वारा किया गया हास्य ही सहज मनोर×जन एवं आनन्द का संचार करने में समर्थ है। इसका उदात्त वर्णन तृतीय अंक में **''स्वर्णपात्र''** के चोरी के समय स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। निद्रा में ही संघ व चोर को देखकर **'शर्विलक'** को मित्र समझ कर स्वर्णभाण्ड देते हुए कहता है– **''भो वयस्य! सन्धिरिव दृश्यसे, चौरमिव पश्यामि तद्गृहासु भवान्निदं सुवर्णभाण्डम्।।**

2. सहृदय एवं अनन्य मित्र के रूप में –

मैत्रोय केवल मोदक खाने वाले औदारिक ब्राह्मण ही नहीं अपितु नायक चारूदत्त का एक सच्चा मित्र एवं सुखदुख में साथ देने वाला एक अनन्य बन्धु भी है। चारूदत्त के प्रति उसकी अगाढ मित्रता इस बात से और स्पष्ट होती है कि स्वयं चारूदत्त सुख दुःख में साथ देने वाला मित्र मानते हुए उसे सार्वकालिक मित्र का सम्बोधन करता है– **''अये सार्वकालिक मित्र मैत्रेयः प्राप्तः''**। मैत्रेय सदा चारूदत्त की भलाई के लिए चिन्तित रहता है। चारूदत्त के वैभव हीन हो जाने पर भी उसकी निष्ठा चारूदत्त के प्रति कम नहीं हुई है। दीन कपोत की तरह इधर उधर चुगकर वापस घर चारूदत्त के पास ही लौटा है। वह स्वयं चारूदत्त की दरिद्रता से दुःखी है किन्तु हतोत्साहित एवं निराश चारूदत्त

को बार–बार सान्त्वना देते हुए कहता है– ''**भो वयस्यः एते खलुदास्याः पुत्रा अर्थकल्यवर्ताः वरटाभीता इव गोपाल द्वारका आरण्ये यत्र यत्र न खाद्यन्ते तत्र तत्र गच्छन्ति।**'' चारूदत्त के लिए कोई भी त्याग करने को वह प्रस्तुत है। उसकी चारूदत्त के प्रति अगाढ व उदात्त मित्रता उस समय प्रकट होती है, जब चारूदत्त को फांसी की सजा होती है तो वह भी मृत्यु को आलिंगन करने को उद्यत होती है।

3. व्यवहार में कुशल

मैत्रेय नैतिकता की अपेक्षा व्यावहारिकता पर विश्वास करता है। वसन्तसेना के चोरी गये अल्पमूल्य आभूषण के बदले धूता का बहुमूल्य हार देना नहीं चाहता। इसके लिए वह झूठ भी बोलने को उद्यत हो जाता है।

चारूदत्त की समृद्धि की सतत् कामना करता है। वह किसी भी परिस्थिति में चारूदत्त को दुःखी नहीं देखना चाहता है। चारूदत्त की किसी भी बदनामी को वह बर्दाश्त नहीं कर सकता था। दीपक जलाने के लिए उसके घर में तेल नहीं है– यह बात भी चारूदत्त के कान में ही कहता है। वह नहीं चाहता कि वसन्तसेना को चारूदत्त की दरिद्रता का थोड़ा भी आभास मिले।

4. देवपूजन में अविश्वास –

यद्यपि वह जाति से ब्राम्हण है तथापि उसका धार्मिक कृत्यों में अधिक विश्वास नहीं है। चारूदत्त द्वारा पूजा के लिए कहने पर कहता है– **''एवं पूज्यमानाऽपि देवता न से प्रसीदन्ति ततो को गुणो देवेषु अर्चितेषु । ''**

5. भोजन भट्ट –

मैत्रेय एक स्वादुभोजन प्रिय ब्राम्हण है। वह वेश्या के घर पर भी भोजन की अपेक्षा करता है – **''एतावत्या ऋद्धया न तथाह भणितः–आर्य मैत्रेय विश्रम्यता भल्लकेन पानीयमपि पीत्वा गम्यताम्।।''**

6. भीरू तथा क्रोधी –

मैत्रेय भीरू तथा क्रोधी है। वह रात में अन्धेरे में चतुष्पात पर जाने से डरता है। जब रदनिका साथ चलती है तो कहीं स्वयं जाता है।

शकार पर उसके क्रोध की सीमा नहीं है। चारूदत्त पर वसन्त के हत्या के अरोप से वह अपना धैर्य खो बैठता है। वह शकार को गालियाँ ही नहीं अपितु दंडे से भी पिटता है क्रोध में वह संयम नहीं रख पाता। शकार से झगड़ने समय आभूषण भूमि पर गिराकर तो वह चारूदत्त के अपराध पर मानो मोहर ही लगा देता है। सम्भवतः यह भूल नाटककार द्वारा सोद्देश्य बनाती थी जो आगे कथानक को गति प्रदान करने में सहायक है।

- **शर्विलक –**

मृच्छकटिक प्रकरण में शर्विलक उपनायक वा अनुनायक के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। यद्यपि उसकी कथा का अधिकांश भाग परोक्ष में तथा बहुत अल्पभाग प्रत्यक्ष में अभिनीत होता है तथापि वह अपने पात्राभिव्यक्ति के कारण वह प्रकरण का मुख्य पात्र अनुनायक है।

1. चारित्रिक विशेषताएं –

शर्विलक का चरित्र सवलता और निर्बलता का सम्मिश्रण है। सज्जनता और दुर्जनता का संयोग है। जिसके द्वारा कवि तत्कालीन सामाजिक उच्छृङ्खलता की विचारधारा को प्रकाशित किया है। शर्विलक एक दान न लेने वाले चतुर्वेदी ब्राम्हण का पुत्र है, जो अवन्ति में रेभिल के पास निवास करता है। वह एक प्रवासी है।

2. चौर्यकला में निपुण –

शर्विलक चौर्यकर्म में अत्यन्त निपुण है। उसने योगाचार्य नामक किसी आचार्य से चौर्यकला सीखी थी। उसे इस कला का व्यावहारिक अभ्यास भी है। गर्हित चौर्यकर्म को करते हुए भी वह अपने कला कौशल का ऐसा प्रदर्शन करना चाहता है कि जिसको देखने वाले भी प्रशंसा करें । चौर्यकर्म में निर्विध्नता के लिए वह विनयपूर्वक कार्तिकेय, भास्कर, नन्दी आदि देवताओं का स्मरण करता है।

चोरी जैसे कार्य में रत होने पर भी वह विवेकहीन नहीं है। वह सेंध काटने के लिए शास्त्रोक्त उपयुक्त दीवार का ही चयन करता है तथा फिते के अभाव में वह अपने यज्ञोपवीत का ही प्रयोग करता है। इससे उसकी कला निपुणता का परिचय मिलता है।

चौर्य कर्म को वृत्ति के रूप में स्वीकारने पर भी शर्विलक को कोई लज्जा नहीं है। क्योंकि चोरी कर्म तो पुरणों में प्रसिद्ध है, जिसे द्रोणपुत्र अश्वत्थामा आदि महापुरूषों ने भी किया था। उसका विश्वास है कि नौकरी में पराधीन होकर दीनता की अपेक्षा चौर्य कर्म ही बेहतर है– **स्वाधीना वचनीयताऽपि हि वरं बद्धो न सेवा×जलिः।।**

3. सच्चा व दृढ मित्र–

शर्विलक एक सच्चा एवं दृढ़ मित्र है। जब मार्ग में अपने मित्र आर्यक की राजा पालक द्वारा गिरफ्तारी का समाचार मिलता है, तो समाचार सुनकर उसका मन विचित्र दोराहे पर खड़ा हो जाता है – कर्तव्य और प्यार में किसी एक को चुनना पड़ता है। वह तत्काल निर्णय लेते हुए कहता है– संसार में मनुष्यों के लिए मित्र एवं वनिता दोनों अत्यन्त प्रिय है। पर इस समय जब मित्र कारागार में संकट में पड़ा हो तो उसके हितार्थ सैकड़ों सुन्दरियां न्यौछावर की जा सकती है।

वह मदनिका को रेमिल के घर भेजकर अपने मित्र आर्यक को कैद से मुक्त कराने के लिए अपने प्राणों की भी चिन्ता नहीं करता। यह है उसके मित्रता का परिचय–

द्वयमिदतीव लोके प्रियं नराणां सुहृद्वनिता च ।
सम्प्रति तु सुन्दरीणा रालादपि सुहृद्विशिष्टतम।।

इस प्रकार शर्विलक अपने मित्र **'आर्यक'** के प्रति अभि स्नेह से भरा हुआ है। मदनिका को घर भेजकर मित्र कार्य में जाने का निर्णय उसके त्याग को प्रशंसनीय बना देता है।

4. सहृदय प्रेमी–

शर्विलक मदनिका से सच्चा एवं पवित्र प्रेम करता है। उसने मदनिका को दासकर्म से छुड़ाने के लिए चोरी जैसा निन्दनीय कर्म भी करता है। जब वह चोरी करने चलता है तब कहना है –

धिगस्तुखलु दारिद्रयमनिर्वेदि पौरूषम् ।
यदेतद् गर्हित कर्म निन्दामि च करोमि च।।

5. साहसी एवं वीर –

शर्विलक साहस और वीरता की प्रतिमूर्ति है। वह क्रान्तिकारियों का अगुआ है। जेल का फाटक तोडकर रक्षकों के बीच से गोपाल दारक आर्यक को को भगा ले जाना शर्विलक जैसे शूरवीर का ही काम है। वह न केवल अपने कूटनीति से षड़यन्त्र कर पालक की गद्दी पर अभिसिक्त करा देता हैं वह षड्यन्त्र करने में भी अति प्रवीण है–

जातिन्विातान्स्वभुजविकमल वधवर्णान् रजापमानकुपिताश्च नरेन्द्र भृत्यान् ।
उत्तेजयामि सुहृदः परिमोक्षमाणः यौगन्धरायण इवोदयनस्य राज्ञ।।

राज्य विप्लव के नायक के रूप में उसका अदम्य साहस एवं त्याग प्ररांसनीय है।

6. गुणानुग्राही एवं प्रत्युत्पन्नमति –

शर्विलक में गुणग्राहिता भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। मदनिका के समझाने पर चोरी करके लाये गये आभूषण भी तत्काल लौटा देने को प्रस्तुत हो जाता है। कठिन व विपरीत परिस्थिति में भी उसकी बुद्धि कभी कुण्ठित नहीं होती। चारूदत्त के घर पर सेंध लगाते समय उसे पता चलता है कि वह सेंध नापने वाला मानसूत्र भूल आया है। तब पर घबड़ाता नहीं वह अपना काम यज्ञोपवीत से ही साध लेता है–

एते मापयति भित्तिषु कर्ममार्गमेतेन मोचयति भूषण सन्प्रयोगात्।
उद्घाटको भवति यन्त्रादृटे कपाटे दष्टस्य कटिभुजगै परिवेष्टन ।।

यद्यपि उसने स्वयं माना है कि उसने मदनिका को पाने के लिए ही चोरी जैसा दुष्कर्म किया है, फिर भी वह आदर्शों के प्रति निष्ठावान् है। नारी ब्राह्मण और यज्ञ आदि की पवित्रता को नहीं करता तथा चोरी करते समय भी उसकी बुद्धि कार्याकार्य का विचार करती है। कामदेव के वशीभूत होने पर भी वह आत्म सम्मान की रक्षा में सजग है।

इस प्रकार शर्विलक के रूप में नाटककार शुद्रक ने एक कर्तव्यनिष्ठ साहसी त्यागी एवं चारित्रिक गैस से विभूषित पात्र को मंच पर उतारा है। वह सच्चा मित्र और सच्चा प्रणयी है। उपकार के प्रति कृपा और प्रत्युपकार के लिए लालायित है। वेश्या दासी से प्रेम करता हुआ भी कौटुम्बिक मर्यादा एवं ग्राहस्थ्य के प्रति भी सदा सजग है।

- **मदनिका**

मदनिका गणिका वसन्तसेना की दासी ही नहीं, अपितु उसकी प्रिय सहचरी भी है। उसमें दासत्व सुलभ प्रवीणता के साथ ही एक नारी सुलभ कोमल एवं निश्छल हृद्य का दर्शन होता है। वसन्तसेना उससे अपनी कोई बात नहीं छुपाती। वह उसके प्रणयरहस्य की गोप्ती एवं पोषिका है।

1. चारित्रिक विशेषताएं –

मदनिका एक परम चतुर युवती है। वह शर्विलक को अच्छी सम्मति देकर वसन्तसेना के आभूषण चुराने पर भी उसे वसन्तसेना से पारितोषिक दिला देती है। समय समय पर वसन्तसेना को भी अच्छी सम्मति देती है। इसी से वसन्तसेना उसकी प्रशंसा करती है– **परहृदयग्रहणपण्डिता मदनिका खलुत्वम् ।**

वसन्तसेना का उसपर अगाध स्नेह ही नहीं अनन्य विश्वास भी है। चारूदत्त सम्बन्धी अपने गोपनीय प्रणय रहस्य भी वह मदनिका को बतला देती है और मदनिका उसके अनुष्ठान में हृदय से सहयोग भी करती है।

2. सहृदय प्रेमी –

मदनिका सच्चे हृदय से शर्विलक को प्रेम करती है। एक गणिका की गृहपरिचारिका होकर भी मदनिका के विचार विकृत नहीं है। अन्य रूपजीव की तरह उसमें न तो वासना है और पुरूषान्तर में रमणेच्छा। वह वसन्तसेना की तरह एकनिष्ठ प्रेम की कामना करती है शर्विलक पर उसका अगाध स्नेह ही नहीं अपितु अनन्य विश्वास भी है। वह सच्चे हृद्य से शर्विलक को प्रेम करती है। इसीलिए जब शर्विलक उसपर अन्यानुरक्ता और वेश्यादासी होने का लांछन लगाता है। लांछन लगाकर कटु आलोचना करता है वह विचलित नहीं होती। वह रूष्ट होकर जाते हुए शर्विलक को अपने खेद को प्रेमपूर्वक ही स्पष्ट करती है। क्योंकि मदनिका शर्विलक को अगाध प्रेम करती है ।

3. कर्तव्य परायणता –

मदनिका ने दासी के रूप में और कुलवधू के रूप में अपने कर्तव्य का त्यागपूर्वक पूरा निर्वाह किया है। दासीरूप में उसने सदा वसन्तसेना के विश्वास को बनाये रखा है तथा पत्नी रूप में उसने कमी भी शर्विलक के मार्ग में बाधा बनने का प्रयास नहीं किया। मिलन के अवसर पर भी अपने पति को कर्तव्य का बोध कराती हुई मित्रकार्य के लिए उत्साह बढ़ाकर पति वियोग को भी सहन करती है।

- **उपसंहार –** इस प्रकार मदनिका दासी कुल में उत्पन्न होने एवं गणिका की सेवा में रहती हुई भी एक कुलीन वधू के अरमान रखती है। वह मृद्भाषिनी विनम्र चतुर एवं अवसर के अनुसार निर्णय लेने वाली बुद्धिमान नारी का प्रतिनिधित्व करती है। उसमें धैर्यका अभाव नहीं है। उसका आचरण एक आदर्श प्रेमिका का है, जो त्याग की प्रतिमूर्ति बनकर नाटक में उभरी है। मदनिका और शर्विलक का विवाह कराकर वसन्तसेना ने अपना और चारूदत्त का मिलन सुनिश्चित करवाया। यद्यपि मदनिका और शर्विलक का कथानक मुख्य कथा के क्रम में एक अवरोध बन कर आया है, तथापि इसका अपना महत्व है। दोनों ही पात्र कथानक को अग्रसर करने में काफी सहायक सिद्ध हुए हैं।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. मृच्छकटिकम् आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र
2. मृच्छकटिकम् – रांगेय राधव
3. मृच्छकटिकम् – मोहन राकेश
4. मृच्छकटिकम् – परिशीलन – डॉ0 त्रिभुवन मिश्र